गुरु नानक - सबद ९८
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७५

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥
हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥
हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥
धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥
धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥

सार: जब हम अपना ध्यान संपत्ति, प्रतिष्ठा और अपनी बनाई हुई छवि पर केंद्रित करते हैं तब धीरे-धीरे हमारा ध्यान उन चीज़ों से हट जाता है जो जीवन में वास्तव में महत्वपूर्ण होती हैं। यह बदलाव हमें मूल्यों को भौतिक चीज़ों के जमावड़े से जोड़ने के लिए प्रेरित करता है और हम स्वयं को सच्ची आत्म-जागरूकता के बजाय भ्रामक तुलनाओं के माध्यम से स्वयं को परिभाषित करने लगते हैं। परिणामस्वरूप, हम ज़रूरी चीज़ों के बजाय क्षणिक चीज़ों को प्राथमिकता देने लगते हैं और सतही लाभ के लिए सार्थक अनुभवों की बलि चढ़ा देते हैं। यह भटकाव हमारे व्यक्तिगत विकास में बाधा डालता है और उस सच्ची अंतर्दृष्टि और आंतरिक स्वतंत्रता पाने की हमारी क्षमता को धुंधला कर देता है जो सच में हमारे जीवन को समृद्ध कर सकती है।

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥
रात के तीसरे पहर में, हे व्यापारी मित्र, मनुष्य अपनी चेतना को धन और यौवन से जोड़ लेता है। यहाँ 'व्यापारी मित्र' हमारे विचारों का प्रतिनिधित्व करता है और 'रात का तीसरा पहर' उस अवस्था को दर्शाता है, जहाँ चंचल भटकाव होता है, बाहरी चीज़ों, स्थिति और आत्म-छवि के प्रति, यह गहरी आसक्ति की ओर बदलाव का संकेत देता है।

हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥
हे व्यापारी मित्र, सर्वव्यापी एकत्व का स्मरण नहीं किया जाता जो तुम्हें बंधनों से मुक्त कर सकता था। यह उस विडंबना की ओर संकेत करता है कि हम संचय के माध्यम से स्वतंत्रता खोजते हैं जबकि उस आंतरिक विवेक की उपेक्षा करते हैं जो झूठे लगाव की गांठें खोल देता है।

हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥
जब सर्वव्यापी चेतना के एकत्व पर विचार नहीं किया जाता तब मनुष्य सांसारिक भ्रमों के प्रति लगाव में दिशाहीन हो जाता है। यह उस मानसिक अशांति को दर्शाता है जो तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति स्थिर आंतरिक स्रोत से जुड़ने के बजाय केवल क्षणभंगुर रूपों से पहचान बनाता है।

धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥
भौतिक धन से घिरा हुआ और जवानी के नशे में डूबा हुआ मनुष्य अमूल्य जीवन को गँवा देता है। यह उस चूके हुए अवसर को दर्शाता है जब ऊर्जा और क्षमता बिना सजगता के निरर्थक कामों पर खर्च की जाती हैं।

धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥
न तो नैतिक विवेक के साथ कोई व्यवहार किया, न ही सद्कर्मों के साथ सामंजस्य बिठाया। यह उन मूल्यों में निवेश करने में हमारी कमियों को उजागर करता जब हम भौतिक अस्तित्व से परे हमारे सच्चे स्वरूप को संबल देने वाले मूल्यों में निवेश नहीं करते।

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥
नानक कहते हैं, रात के तीसरे प्रहर में मनुष्य अपनी चेतना को धन और यौवन से बाँध लेता है। यह पुनः हमें क्षणिक बाहरी चीज़ों, प्रतिष्ठा और छवि के प्रति गहरी आसक्ति के परिणामों पर आत्म-चिंतन के लिए प्रेरित करता है। (३)

तत्त्व: गुरु नानक बताते हैं कि हम ज़िंदगी की बाहरी और भौतिक चीज़ों से कितनी आसानी से भटक सकते हैं और स्थायी मूल्यों के बजाय चीज़ें जमा करने पर ध्यान देते हैं। सर्वव्यापी चेतना के एकत्व को पहचानकर हम इन बंधनों से मुक्त हो सकते हैं। विडंबना यह है कि हम सोचते हैं

कि हम भौतिक चीज़ें जमा करके आज़ादी पा सकते हैं, यह जाने बिना कि यह अक्सर हमें झूठे मोह में बांध देती हैं। इससे मानसिक अशांति होती है क्योंकि हम ताकत के एक स्थिर अंदरूनी स्रोत से जुड़े रहने के बजाय पल भर की चीज़ों से खुद को जोड़ लेते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com